વિશ્વ હિન્દી દિવસની શાનદાર ઉજવણી ૧૦ જાન્યુઆરી

વિદ્યાર્થીઓ સ્પર્ધાત્મકની તૈયારી કરી સફળતા પ્રાપ્ત કરે તે માટેનું માર્ગદર્શન આપતા વિભાગાધ્યક્ષ .

प्रस्तुत कर्ता : डॉ. मनीषा आर जोगीया,
आसिस्टंट प्रोफेसर
सरकारी विनयन,वाणिज्य और विज्ञान कोलेज,
खेरगाम, जिल्ला : नवसारी
विषय : हिन्दी

महादेवी वर्मा के काव्य में विरहानुभूति एवं पीडा

महादेवी वर्मा (26 मार्च 1907 - 11 सितंबर 1987) (आधुनिक मीरा)

सारांश

(वेदना जीवन का मूल स्वर है, वेदना और साहित्य का अभिन्न संबंध रहा है I महादेवी वर्मा की वेदना हिंदी साहित्य की अनमोल निधि है I आत्म संयम की महारानी ने लौकिक प्रेम को ठुकराकर पीडा को गले लगाया और दु:ख में भी सुख का अनुभव किया , यही पीडा उसे शक्ति

प्रदान करती है I करुणा महादेवी की विरहानुभूति का आधार है , " भोगा हुआ यथार्थ काव्य में उतरकर खूबसूरत रंग लाया I निराशावाद की अंधेरी रात में जीवन प्रभात की चाह महादेवी की रचनाओं में बार बार दीप्त हो उठती है और जितना ही यह अंधेरा घना होता है , उतनी ही यह चाह और भी तीव्र हो जाती है)

भारतीय साहित्य में हिन्दी साहित्य अपना एक अलग ही स्थान रखता है । हिंदी साहित्याकाश अपने सितारों की चमक से हंमेशा चमकता रहा है I आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक अनेक सिद्धहस्त ,बहुमुखीप्रतिभा सम्पन्न कवि एवं कवयित्रीयों ने अपना अभूतपूर्व योगदान दिया I आधुनिक काल में छायावाद के स्तंभ एवं चार संस्थापको मे से एक और हिन्दी कवि संमेलनो में से एक और नाम जैसे ही गुण रखनेवाली महान देवी महादेवी वर्मा का नाम हिंदी साहित्य में सुवर्णाक्षरों से लिखा है I हिंदी भाषा की कवयित्री, निबंधकार , रेखाचित्रकार ,चित्रकार कहानी लेखिका और एक प्रतिष्ठित हस्ती थी I वर्मा ने आझादी के पहले और आझादी के बाद भी भारत को देखा था I वह उन कवयित्री में से एक थी जिन्होनें भारत के व्यापक समाज के लिए काम किया I अपने साहित्य में भी उनके सामाजिक उत्थान के कार्यों और महिलाओं के कल्याण के विकास को गहराई से चित्रित किया है I 'भोगा हुई यथार्थ ' यह उक्ति महादेवीजी के जीवन को सार्थक करती है I वह विवाहिता होते हुए भी तपस्वी का जीवन जीना चुना I खुद के जीवन की अनुभूतिया जब तिव्र होकर कवि ह्रदय से झंकृत होती है तो उन्हें कविता के रूप में संजोया जाता है , कुछ एसा ही वर्माजी के साथ हुआ I संपूर्ण हिंदी साहित्य में उसकी पीडा की समानता करनेवाला कोई नही है .उसे 'पीडा की रानी' कहा गया है I महादेवी वर्माने मन की गहरी अनुभूतियों को काव्य का विषय बनाया आउर मर्मस्पर्शी ,गंभीर तथा तीव्र संवेदनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है I काव्य में विरह कि इतनी सघनता से प्रस्तुत किया कि शेष अनुभूतिय भी उनकी पीडा के रंगो में रंगी हुई जान पडती है, वे स्वयं लिखती है . दु:ख मेरे निकट जीवन का एसा काव्य है जो सारे संसार को एकसूत्र में बांधनें की क्षमता रखता है I 1. वह अनेक कलाओं मे पारंगत थी ,संगीत में उसे विशेष रुची थीं। महादेवी वर्मा ने मन की इन्ही अनुभूतियों को अपने काव्य में मर्मस्पर्शी और गंभीर अभिव्यक्ति प्रदान की है I कवयित्री ने अपने काव्य में पीडा को इतनी सघनता से प्रस्तुत कीया है कि साक्षात मीरा ही नजर आती है I उनका विरह उनके सभी काव्य में विद्यमान है ,वे वेदना मे हे सुख की अनुभूति करती है I कभी कभी वेदना मीरा से भी बढ्कर तिव्र रूप धारण कर लेती है कहने कि आवश्यकता नही है कि पीडा ही उनके काव्य का प्राणतत्व रहा है I वे वेदना से प्रारंभ करके वेदना में ही अपनी परिणति खोजती है I उनके काव्य का मुख्य प्रतिपाद्य प्रिय से बिछुडना और उसे खोजने की आतुरता है I महादेवीजी ने अपने काव्य में

आत्मा और परमात्मा के वियोग को विरहानुभूति के रूप में प्रस्तुत किया है I प्रिय याने परम कृपालु परमात्मा , एक अगोचर शक्ति ,एक रहस्यमयी ताकत जो पूरे संसार का संचालन करती है I महादेवीजी ने अपने काव्य में आत्मा और परमात्मा के वियोग को विरहानुभूति के रूप में प्रस्तुत किया है I यह कवयित्री ने कुछ एसा लिखा जो सदैव अमर रहनेवाला है , जिनके परिणाम स्वरूप साहित्त्य का सर्वोच्च पुरस्कार ज्ञानपीठ उसे प्राप्त हुआ I

1982 में तत्कालीन ब्रिटेन की प्रधान मंत्री मागरिट थैचर से ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करते हुए महादेवी वर्मा प्रतिभावान कवयित्री महादेवी रहस्यवाद की प्रतिनिधि हस्ताक्षर हैं। यामा (१९३६) – महादेवी वर्मा प्रस्तुत पुस्तक ***यामा*** में महादेवी की काव्य यात्रा के चार आयाम संगृहीत हैं, नीहार, रश्मि, नीरजा तथा सांध्यगीत जो भाव और चिंतन जगत की क्रमबद्धता के कारण महत्त्वपूर्ण हैं। महादेवी वर्मा रहस्यवाद और छायावाद की कवयित्री थीं, अतः उनके काव्य में आत्मा परमात्मा के मिलन विरह तथा प्रकृति के व्यापारों की छाया स्पष्ट रूप से द्रष्टिगोचर होती है । वेदना और पीड़ा महादेवी जी की कविता के प्राण रहे। उनका समस्त काव्य वेदनामय है। उन्हें निराशावाद अथवा पीड़ावाद की कवयित्री कहा गया है।इससे पूर्व महादेवी वर्मा को 'नीरजा' के लिये 1934 में 'सक्सेरिया पुरस्कार', 1942 में 'स्मृति की रेखाएँ' के लिये 'द्विवेदी पदक' प्राप्त हुए। 'यामा' नामक काव्य के लिये उन्हें भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ वेदना और पीडा महादेवीजी की कविता के प्राण रहे इसीलिए उन्हें पीडावाद की कवयित्री कहा गया।उनकी कविता वियोग श्रृंगार प्रधान है , वियोग के जैसे रहस्यमय चित्र उन्होनें अंकित किए है, वे अत्यंत दुर्लभ है , करुण रस की व्यंजना भी उनके काव्य में हुई है ।

<u>महादेवीजी के काव्य में रहस्यवादी भावना :</u>

उसके काव्य में रहस्यानुभूति के प्रत्येक चरण की अभिव्यक्ति मिलती है। वह प्रकृति-व्यापार में एक विराट सत्ता के दर्शन करती और उसके साथ रहस्यात्मक, रागात्मक संबंध स्थापित करने को आतुर रहती हैं। किंतु उन्हें यथार्थ विरोधी रहस्यलोक में ही रहे आना कभी स्वीकार नहीं हुआ। वह अपनी संवेदनाओं को शोषित-उपेक्षित वर्ग से जोड़कर चलीं। उन्होंने अपने युग की मुक्ति आकांक्षा को अपनी रहस्यानुभूति में स्थान दिया ! यह मुक्ति उनके लिए नारी-मुक्ति भी थी। उनकी मुक्ति की अवधारणा इसी लोक में निर्बन्ध होने की है। महत्वपूर्ण बात यह है कि महादेवी की रहस्यानुभूति मध्ययुगीन संतों के रहस्यवाद से भिन्न है। महादेवी का रहस्यवाद मध्ययुगीन रहस्यवाद की तरह साम्प्रदायिक नहीं था, और उसके पीछे किसी धार्मिक मतवाद की प्रेरणा भी नहीं थी। यह

'साम्प्रदायिक साधनापरक रहस्यवाद' से अलग अनुभूति थी। वह एक कुशल चित्रकार और रचनात्मक अनुवादक भी थीं। उनके साहित्त्य में पशु- पक्षीयों (गिल्लू, गौरा गाय) के प्रति भी अद्भूत प्रेम दर्शाया उन्हें हिंदी साहित्य के सभी महत्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ ।

नंद दुलारे वाजपेयी ने महादेवी की वेदना के बारे में लिखा है कि "प्रसाद के आंसु , निराला की स्मृति जैसी उद्दात और एक तान कल्पना तथा पल्लव का सा सौंदर्य महादेवी मे नही है , किंतु वेदना का विन्यास , उसकी वस्तुमता का बहुरूप और विवरणपूर्ण चित्रण जितना महादेवीजी ने दिया है, उतना वे तीनो कवि नही दे सके "1. अपनी व्यथा, वेदना और रहस्य भावना को ही इन्होंने मुखरित किया है। उनकी कविता का मुख्य स्वर आध्यात्मिकता ही अधिक दिखायी देता है

महादेवी वर्मा एक समाज सुधारक थीं। उन्होंने भारत में महिलाओं के हितों की पुरजोरवकालतकी। समाज के दलित, उपेक्षित वर्ग के प्रति उनकी करूणा और सेवा- भावना उनके वेदना का दूसरा पहलू प्रस्तुत करती है। क्योकि महादेवी का युग परतंत्र भारत का युग था उस समय भारत में नारी की स्थिति अत्यंत दयनिय थी , अनमेल और बेमेल विवाह युग की मुख्य समस्या

समाज के दलित, उपेक्षित वर्ग के प्रति उनकी करूणा और सेवा-

भावना उनके वेदना ।महादेवी जी ने अपने काव्य में एक तरफ तो भारतीय नारी के असंतोष, निराशा और अकांक्षा स्वर मुखरित हुई है। कवयित्री ने सदैव परमार्थ व परहित को महत्व दिया। वे दूसरे के दुखों में स्वंय दुखी हो उठती है। सदैव मानव कल्याण की कामना करती हुई दिखाई देती है। महादेवी जी को करूणा की कवयित्री कहा जाता है। अपने करूणा और विरह वेदना पीड़ा में लीन कर दिया । वे एक जगह स्ंवय को "मैं नीर भरी दुख की बदली" कहती है। महादेवी जी के काव्य में जो विरह दिखाई देता है, वह अपने प्रियतम से मिलने की आतुरता के कारण है। "नीहार" महादेवी के किशोर जीवन की वह रचना है, जिसमें उस का मन प्रणय और पीड़ा के वशीभूत हो रहा था। कवयित्री का मन एक ऐसा अ नोखा संसार बसाना चाहता है जहां वेदना की मधुर धारा बह रही उनका प्रियतम से नाता अत्यंत गूढ़, अत्यंत अज्ञेय है। इसे समझने के लिए कभी-कभी तो आत्मा-परमात्मा के संबंध का सहारा लेना पड़ता है। जीवन को 'विरह का जलजात' मानने वाली महादेवी प्रणय के संयोग पक्ष का भी चित्रण करती है। प्रेम अपने समग्र रूप मे महादेवी की कविता में प्रधानता से विद्यमान है।

निष्कर्षः –

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि कवयित्री ने अपने काव्य में अपने निजी जीवन और जगत से उपलब्ध सुख – दुःख, हास्य – रूदन, हर्ष शोक तथा आनंद और करूणा की अभिव्यक्ति की है। कवयित्री का हृदय ख दुखात्मक अनुभूतियो से भरा है। जब ये अनुभूतियां विचलित और उद्वेलित क ने लगती है तो हृदय से मनोभाव कविता के रूप में फूट पडते हैं। महा वी जी ने भी अपने काव्य में विरह वेदना के रूप में अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की। उनके काव्य में विरह वेदना और प्रेम की मूक पीड़ा अत्यन्त मार्मिकता के साथ व्यक्त की गई है। अपनी विरहानुभूति में कल्पना, करूण सात्विकता, भावोद्रेक, आषावादी दृष्टिकोण आदि समलित करते हुए महादेवी जी ने अपने काव्य को सुसज्जित किया है। उनकी विरह वेदना एक कवयित्री की वेदना है। उनका काव्य चिन्तन प्रधान है। उन्होने अपने काव्य द्वारा चिन्तन को नई दिशा प्रदान की। संपूर्ण भारतीय साहित्य में विरह वेदना को श्रेष्ठ रू प में प्रस्तुत करने के लिए महादेवी का स्मरण किया जाता है। यह कहना अतिशयोक्ति नही होगा कि जो अभिव्यक्ति महादेवी जी ने अपने काव्य के द्वारा की है उसमें कोई अन्य कवि उनके आस पास तक नही फटकता। छायावा युग में एक मात्र ऐसी भाव यौवना कवयित्री है जिन्होने नवीन विचारों को अप नी प्रखर बुध्दि की कसौटी पर कसा, खरे उतरने पर उन्हे प्राचीन भारतीय साहित्य के सांचे में ढाल कर निर्भिकतापूर्वक अपनाया। वे वैयक्तिक सुख को विश्व वेदना में घोलकर अपने जीवन को सार्थक मानती है तथा वैयक्तिक दुःख को विश्व सुख में घोलकर जीवन को अमरत्व प्रदान करना चाहती है। उन की विरहानुभूति को देखकर उन्हे आधुनिक काव्य की मीरा कहा जाता है।

11 सितंबर, 1987 को इलाहाबाद में उनकी मृत्यु हो गई । उन्होंने अपना अधिकांश जीवन उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद (प्रयागराज) में बिताया। 11 सितंबर 1987 को इलाहाबाद में उनकी मृत्यु हो गई।[46]उनकी पीड़ा हृदय की शांत और गंभीर पीड़ा थी। चिर विरह की भावना के कारण महादेवी की कविताओं में उनके हृदय की करूणा दिखाई देती है। करूणा से भरी होने के कारण महादेवी की वेदना भी परिष्कृत रूप में अभिव्यक्त हुई है । कहा जा सकता है कि कवयित्री ने अपने काव्य में अपने निजी जीवन और जगत से उपलब्ध सुख - दुःख , हास्य - रूदन , हर्ष - शोक तथा आनंद और करूणा की अभिव्यक्ति की है। कवयित्री का हृदय सुख दुखात्मक अनुभूतियो से भरा है। जब ये अनुभूतियां विचलित और उद्वेलित करने लगती है तो हृदय से मनोभाव कविता के रूप में फूट पडते हैं। महादेवी जी ने भी अपने काव्य में विरह वेदना के रूप में अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की। उनके काव्य में विरह वेदना और प्रेम की मूक पीड़ा अत्यन्त मार्मिकता के साथ व्यक्त की गई है। अपनी विरहानुभूति में कल्पना , करूणा, सात्विकता , भावोद्रेक , आषावादी दृष्टिकोण आदि समलित करते हुए महादेवी जी ने अपने काव्य को सुसज्जित किया है। उनकी विरह वेदना एक कवयित्री की वेदना है। उनका काव्य चिन्तन प्रधान है। उन्होने अपने काव्य द्वारा चिन्तन को नई दिशा प्रदान की। संपूर्ण भारतीय साहित्य में विरह वेदना को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत करने के लिए महादेवी का स्मरण किया जाता है। यह कहना अतिशयोक्ति नही होगा कि जो अभिव्यक्ति महादेवी जी ने अपने काव्य के द्वारा की है उसमें कोई अन्य कवि उनके आस पास तक नही फटकता। छायावादी युग में एक मात्र ऐसी भाव - यौवना कवयित्री है जिन्होने नवीन विचारों को अपनी प्रखर बुध्दि की कसौटी पर कसा, खरे उतरने पर उन्हे प्राचीन भारतीय साहित्य के सांचे में ढाल कर निर्भिकतापूर्वक अपनाया। वे वैयक्तिक सुख को विश्व वेदना में घोलकर अपने जीवन को सार्थक मानती है तथा वैयक्तिक दुःख को विश्व सुख में घोलकर जीवन को अमरत्व प्रदान करना चाहती है। उनकी विरहानुभूति को देखकर उन्हे आधुनिक काव्य की मीरा कहा जाता है।

सन्दर्भः -1. यामा की भूमिका, महादेवी वर्मा, पृ-3

2. दीपशिखा, महादेवी वर्मा

3 दीपशिखा, महादेवी वर्मा,

4. यामा, संध्यागीत,

5. यामा, रश्मि,

6. यामा, महादेवी वर्मा

7. महादेवी वर्मा की काव्य अनुभूति, डॉ. रेणू दीक्षित.

8. यामा, महादेवी वर्मा.

૧૦.૨.૪. સંસ્કૃત વિભાગનો અહેવાલ

શૈ.વર્ષ : ૨૦૨૩-૨૪

પ્રા. ડૉ. યોગેશકુમાર એન. ટંડેલ
(સંસ્કૃત વિભાગાધ્યક્ષ)
પ્રા. નાથાભાઈ ડી. મછાર (સંસ્કૃત વિભાગ)

વિશ્વની સૌથી પ્રાચીનતમ ભાષા સંસ્કૃત છે. સ્વયં બ્રહ્મા તથા દેવોની ઉત્પત્તિની સાથે જ સંસ્કૃત ભાષાની પણ ઉત્પત્તિ થઇ હતી. તેથી જ તો તેને દેવવાણી અર્થાત્ દેવોની ભાષા પણ કહેવાય છે. વિશ્વનો સૌ પ્રથમ ગ્રંથ ઋગ્વેદ સંસ્કૃતમાં રચાયો હતો. બધા જ વેદોની મૂળ ભાષા સંસ્કૃત છે. ત્યાર બાદ રચાયેલ બ્રાહ્મણગ્રંથો, આરણ્યકો, ઉપનિષદો, વેદાંગો, રામાયણ, મહાભારત પુરાણો આદિ ગ્રંથો પણ મૂળ સંસ્કૃતમાં જ છે, જેનું જ્ઞાન માનવીને કૃતકૃત્ય કરે છે. વિશ્વનું બધું જ સાહિત્ય સંસ્કૃતમાં જોવા મળે છે. ધર્મશાસ્ત્ર, ખગોળશાસ્ત્ર, ગણિતશાસ્ત્ર, વ્યાકરણશાસ્ત્ર, દર્શનશાસ્ત્ર, જ્યોતિષશાસ્ત્ર, આયુર્વેદશાસ્ત્ર આદિ સમસ્ત શાસ્ત્રોના મૂળ સંસ્કૃતમાં જોવા મળે છે. સંસ્કૃત માટે કહેવાયું છે કે,

'भाषासु मधुरा मुख्या दिव्या गीर्वाणभारती ।'

સંસ્કૃત ભાષા સરળ, મધુર, સુંદર, ભવ્ય, લાલિત્યપૂર્ણ અને લાઘવથી યુક્ત છે. વિશ્વના સમસ્ત ભાષાઓના સંમ્મેલનોમાં સંસ્કૃત ભાષા આજે ઉન્નત મસ્તકે પોતાની વિજયપતાકા લહેરાવી શકે છે. કેટલાક અજ્ઞાનીઓ સંસ્કૃતને મૃત ભાષા કહે છે, જે તેઓની જ મૂર્ખતાને સાબિત કરે છે.

'भाषासु मधुरा मुख्या दिव्या गीर्वाणभारती ।'

વિદ્યાર્થીઓ સંસ્કૃત ભાષાનું મહત્વ સમજે તથા તેઓના જ્ઞાનમાં વધારો થાય અને વધુને વધુ વિદ્યાર્થીઓ સંસ્કૃત ભાષામાં અભિરુચિ ધરાવે તેમજ કોરોના મહામારીના દિવસો દરમ્યાન પોતાના સમયનો સદુપયોગ કરી શકે એ હેતુસર અત્રેની કૉલેજ દ્વારા સંસ્કૃત વિભાગ અંતર્ગત વિવિધ પ્રવૃત્તિઓનું આયોજન કરવામાં આવેલ છે, જે નીચે મુજબ છે.

૧. તા.૨૨/૧૨/૨૦૨૩ ના રોજ શ્રીમદ્ ભગવદ્ ગીતાની જન્મજયંતિની ઉજવણીનું આયોજન કરવામાં આવ્યું, જેમાં સંસ્કૃત વિષયના ૦૪ વિદ્યાર્થીઓ અને ૩૨ વિદ્યાર્થીનીઓ મળી કુલ ૩૬ વિદ્યાર્થીઓએ ઉત્સાહભેર ભાગ લઈ કાર્યક્રમને સફળ બનાવ્યો હતો.

૨. તા.૧૬/૦૨/૨૦૨૪ ના રોજ ક્લાસ ડેકોરેશન કાર્યક્રમનું આયોજન કરવામાં આવ્યું, જેમાં સંસ્કૃત વિષયની ૦૯ વિદ્યાર્થીનીઓએ ઉત્સાહભેર ભાગ લીધો.